

संकट में संस्था

मंदी का असर सिर्फ देशों की अर्थव्यवस्था पर ही नहीं दिख रहा, बल्कि दुनिया का सबसे बड़ा और ताकतवर माने जाने वाला वैश्विक निकाय संयुक्त राष्ट्र भी घोर आर्थिक संकट से जूझ रहा है। हालांकि यह कोई पहला मौका नहीं है जब इस वैश्विक संस्था ने पैसे की कमी की बात कही हो। कई साल से ऐसा हो रहा है जब साल के आखिर में इसके बजट पास होने की बात आती है तो हमेशा कटौती पर जोर दिया जाता है। पिछले साल संयुक्त राष्ट्र ने अपने सालाना बजट में साढ़े अट्‌टाईस करोड़ डालर से ज्यादा की कटौती थी। संयुक्त राष्ट्र कोई कमाऊ संस्था नहीं है। उसका खर्चा सदस्य देशों के योगदान से ही चलता है। लेकिन लंबे समय से समस्या यह बनी हुई है कि सदस्य देश अपने हिस्से का योगदान नहीं दे रहे हैं। जो देश दे रहे हैं वे भी कटौती कर रहे हैं। ऐसे में संस्था के पास पैसे की आवक घट रही है और संकट बढ़ता जा रहा है। सवाल यह उठता है कि यह विश्व संस्था अपने को कैसे बचा पाएगी। अगर पैसा नहीं होगा तो धीरे-धीरे कामकाज ठप होते जाएंगे और यह निष्प्राभावी होती चली आएगी।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतेर्रेस ने हाल में संस्था की माली हालत पर जिस तरह से चिंता व्यक्त की है और सदस्य देशों को चेताया है, वह गंभीर स्थिति का संकेत है। अब हालात यहां तक पहुंच गए हैं कि कर्मचारियों को वेतन देने तक के लिए पैसे के लाले पड़ रहे हैं। गुतेर्रेस ने संयुक्त राष्ट्र सचिवालय में काम करने वाले सैंतीस हजार कर्मचारियों को इस बारे में बता दिया है कि अब वेतन और भत्तों में कटौती होगी। अबकी बार यह नौबत इसलिए आई है कि इस साल के जरूरी बजट का जो पैसा सदस्य देशों से आना था, उसका अभी तक सत्तर फीसद ही आया है। पिछले महीने संगठन को तेईस करोड़ डॉलर की नगदी का संकट झेलना पड़ा। ऐसी ही हालत इसी महीने भी बनी रहेगी। सवाल है ऐसे में किया क्या जाए? सिर्फ वेतन और भत्तों में कटौती से काम नहीं चलने वाला है। इसीलिए महासचिव ने खर्च में कमी के लिए दूसरे उपायों की भी बात कही है। जैसे सम्मेलनों और बैठकों को टाला जाएगा, इनमें कमी की जाएगी। संयुक्त राष्ट्र के अधिकारियों की विदेश यात्राओं पर भी अंकुश लगाया जाएगा। कुल मिला कर संस्था के कामकाज पर असर पड़ना तय है।

आज बदलते विश्व में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो गई है। शांति मिशनों से लेकर क्षेत्रीय विवादों के समाधान तक में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। छोटे से छोटा देश तक अपने विवादों के समाधान की उम्मीद लिए संयुक्त राष्ट्र का दरवाजा इसलिए खटखटाता है कि उसे पता है कि इस संस्था का बुनियादी मकसद ही विश्व शांति के लिए काम करना है। दुनिया के देशों में कानूनी विवाद सुलझाने के लिए अंतरराष्ट्रीय न्यायालय है, तो युनिफेज जैसी संस्था की अपनी बड़ी भूमिका है। ऐसे में अगर इन संस्थाओं के बजट में कटौती होती है तो इसका नुकसान बड़े देशों के बजाय छोटे मुल्कों को ज्यादा होगा। संयुक्त राष्ट्र के ज्यादातर शांति मिशन तीसरी दुनिया के देशों में या फिर पश्चिम एशिया के युद्धग्रस्त क्षेत्रों में चल रहे हैं। ऐसे में खर्च में कटौती का खमियाजा उन देशों के नागरिकों को ही उठाना पड़ेगा। अगर संयुक्त राष्ट्र को बचाए रखना है तो सदस्य देशों को अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठना होगा और योगदान के मसले पर राजनीति बंद करनी होगी।

आतंक के खिलाफ

अफगानिस्तान में अमेरिकी सुरक्षा बलों के साथ लंबे समय से जारी अभियान में आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई में कोई कसर नहीं छोड़ी गई, लेकिन सच यह है कि आज भी वहां तालिबान को इतना कमजोर नहीं किया जा सका है कि आश्चस्त हुआ जा सके। हालांकि बड़े कद के आतंकवादियों के मारे जाने की खबरें आने के बाद आतंकी समूहों के प्रभाव में थोड़ी कमी जरूर देखी जाती है। इस लिहाज से देखें तो वहां एक संयुक्त अभियान में अल कायदा के एक बड़े सरगना आसिम उमर को मार गिराए जाने को बड़ी कामयाबी के तौर पर देखा जाएगा। दरअसल, पिछले महीने की तेईस तारीख को हेलमंड प्रांत के मूसा कला में अमेरिकी सुरक्षा बलों ने तालिबान के परिसर पर छापा मारा था। उसी अभियान के दौरान उमर मारा गया। वह अफगानिस्तान में भारतीय उपमहाद्वीप का प्रमुख था। यों अफगानिस्तान के राष्ट्रीय सुरक्षा निदेशालय का कहना है कि वह पाकिस्तानी नागरिक था, लेकिन ऐसे दावे भी सामने आए हैं कि वह भारत में पैदा हुआ है। पर इतना तय है कि उसकी उपयोगिता को देखते हुए ही उसे इस समूचे इलाके का प्रमुख का दायित्व सौंपा गया होगा और निश्चित रूप से भारत में हुई आतंकी हमलों में भी उसकी बड़ी भूमिका रही होगी।

करीब महीने भर पहले अमेरिकी खुफिया स्रोतों यह जानकारी सामने आई थी कि अफगानिस्तान-पाकिस्तान क्षेत्र में अमेरिका के एक आतंकवादी कार्रवाई के दौरान अल कायदा के सरगना रह चुके उसामा बिन लादेन के बेटे हमजा बिन लादेन की मौत हो गई। इसके साथ ही यह भी माना गया कि अब तालिबान का वह दौर खत्म हुआ, जिसमें वह खुद को सांकेतिक रूप से उसामा बिन लादेन के साथ जुड़ा हुआ मानता था। हमजा बिन लादेन के बाद अब आसिम उमर के मारे जाने की खबर के बाद न केवल तालिबान का बचा हुआ नेतृत्व कमजोर होगा, बल्कि उसकी गतिविधियों पर भी इसका असर पड़ेगा। लेकिन यह मान कर निश्चित हो जाना शायद तालिबान को फिर से तैयार होने का मौका मुहैया कराने की तरह होगा। इसलिए आतंक विरोधी कार्रवाई में एक निरंतरता की जरूरत होगी। सही है कि उसामा बिन लादेन को मार कर अमेरिका ने एक बड़ी कामयाबी हासिल की थी। तब माना गया था कि अब इस समूचे उपमहाद्वीप पर तालिबान का चर्चस्व और असर खत्म हो जाएगा और इसका समूची दुनिया पर असर पड़ेगा। लेकिन हकीकत यह है कि अब भी वहां तालिबान के कई ऐसे बड़े कद के आतंकी मौजूद हैं, जो उसकी कमान संभाल रहे हैं और अफगानिस्तान और वहां से इतर आतंकी हमलों को अंजाम दे रहे हैं।

यह किसी से छिपा नहीं है कि चुनावों के पहले तालिबान ने अफगानिस्तान में किस पैमाने का आतंक मचाया। अमूमन हर रोज दर्जनों लोगों के मारे जाने की खबरें आती रहीं। इससे यहीं जाहिर होता है कि तालिबान या दूसरे आतंकवादी समूहों से लड़ाई के नाम पर अफगानिस्तान में अमेरिकी सुरक्षा बलों के लंबे अभियान के बावजूद वहां आतंकवाद की जड़ों को बहुत कमजोर नहीं किया जा सका है। हाल में अफगानिस्तान में राष्ट्रपति चुनावों के दौरान जितनी कम संख्या में लोग बाहर निकले, उससे साफ था कि आज भी वहां तालिबान का खोफ किस कदर हावी है। दरअसल, तालिबान ने इस बार फिर चुनावों का बहिष्कार करने की घोषणा की थी और लोगों को वोट न देने की हिदायत दी थी। सवाल है कि अफगानिस्तान में ‘सब कुछ छेड़ कर देने’ के दावे के साथ अमेरिका और दूसरे देशों की ओर से सालों से चल रहा बहुस्तरीय अभियान आज भी वहां के आम लोगों के बीच सुरक्षा का भाव नहीं भर सका है तो इसमें किसकी जिम्मेदारी बनती है?

कल्पमेधा

भलाई जितनी अधिक की जाती है, उतनी ही अधिक फैलती है।
- मिल्टन

प्रमोद भार्गव

बढ़ते तापमान को रोकना आसान काम नहीं है, बावजूद इसके हम अपने हिमखंडों को टूटने और पिघलने से बचाने के उपाय औद्योगिक गतिविधियों को विराम देकर कर सकते हैं। पर्यटन के रूप में मानव समुदाय की जो आवाजाही बढ़ रही है, उस पर भी अंकुश लगाने की जरूरत है। इसके अलावा वाकई हम अपनी बर्फीली शिलाओं को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो हमारी ज्ञान परंपरा में हिमखंडों की सुरक्षा के जो उपाय उपलब्ध हैं, उन्हें भी महत्व देना होगा।

दक्षिणी ध्रुव के बर्फीले अंटार्कटिका में हजारों साल से बर्फ के विशाल हिमखंड के रूप में मौजूद हिमखंड का एक भाग पिछले दिनों टूट गया। हिमखंड का टूटा हिस्सा इतना विशालकाय था कि इस पर दिल्ली, मेरठ और गाजियाबाद को बसाया जा सकता है। वैज्ञानिक इसके टूटने की भविष्यवाणी पहले ही कर चुके थे। हालांकि हिमखंडों का टूटना कोई नई बात नहीं है। इनके टूटने और बनने का क्रम चलता रहा है। लेकिन पचास साल बाद किसी हिमखंड का इतना बड़ा हिस्सा पहली बार टूटा है। इसलिए इसे जलवायु परिवर्तन की चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है। यह भी इत्तेफाक है कि यह हिमखंड उस समय टूटा, जब संयुक्त राष्ट्र का पर्यावरण सम्मेलन कुछ दिन पहले ही संपन्न हुआ है। इसी सम्मेलन में स्वीडिश किशोरी ग्रेटा थुनबर्ग ने अपने पंद्रह साथियों के साथ पृथ्वी के बढ़ते तापमान को लेकर तीखा गुस्सा जताया था।

ऐसा माना जाता रहा है कि किसी भारी हिमखंड के

बचाना होगा हिमखंडों को

टूटने की घटना के बाद ही धर्मग्रंथों में दर्ज महाप्रलय की घटना घटी थी। इस घटना को ज्यादातर लोग काल्पनिक मानते हैं, क्योंकि हमारे पास इसके चित्र या अन्य प्रमाण नहीं हैं। परंतु अब जो हिमखंड टूटा है, उसकी उपग्रह से ली गई तस्वीरें और वीडियो भी बना लिए गए हैं। टाइटेनिक जहाज भी ऐसे ही हिमखंड के टुकड़े से टकरा कर नष्ट हो गया था। ये घटनाएं चिंता का सबब बन रही हैं, जिन्हें प्रलय की चेतावनी के रूप में देखा जा रहा है। भारत पहले से ही हिमालय के हिमखंडों के टूटने की घटनाओं से दो-चार हो रहा है। कुछ समय पहले ही गोमुख के विशाल हिमखंड का एक हिस्सा टूट कर भागीरथी यानी गंगा नदी के उदगम स्थल पर गिरा था। इन टुकड़ों को गोमुख से अठारह किलोमीटर दूर भागीरथी के तेज प्रवाह में बहते देखा गया। गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान के वनाधिकारी ने इस हिमखंड के टुकड़ों के चित्रों से इसके टूटने की पुष्टि की थी। ग्लेशियर वैज्ञानिक इन घटना की पृष्ठभूमि में कम बर्फबारी होना बता रहे हैं। इस कम बर्फबारी की वजह धरती का बढ़ता तापमान बताया जा रहा है। इससे हिमखंडों में दरारें पड़ गई थी और इनमें बरसाती पानी भर जाने से हिमखंड टूटने लग गए। अभी गोमुख हिमखंड का बायीं तरफ का एक हिस्सा टूटा है। उत्तराखंड के जंगलों में हर साल लगने वाली आग ने भी हिमखंडों को कमजोर करने का काम किया है। आग और धुएं से बर्फीली शिलाओं के ऊपर जमी कच्ची बर्फ तेजी से पिघलती चली गई। इस कारण दरारें भर नहीं पाईं। अब वैज्ञानिक यह आशंका भी जता रहे हैं कि धुएं से बना कार्बन यदि शिलाओं पर जमा रहा तो भविष्य में नई बर्फ जमना मुश्किल होगी। यदि कालांतर में धरती पर गर्मी इसी तरह बढ़ती रही और ग्लेशियर टूटते रहे तो इनका अक्षर समुद्र का जलस्तर बढ़ने और नदियों के अस्तित्व पर पड़ना तय है। गर्माती पृथ्वी की वजह से हिमखंडों के टूटने का सिलसिला जारी रहा तो समुद्र का जलस्तर बढ़ेगा, जिससे कई छोटे द्वीप और तटीय शहर डूब जाएंगे। हालांकि वैज्ञानिक अभी तक यह निश्चित नहीं कर पाए हैं कि इन घटनाओं को प्राकृतिक माना जाए या जलवायु संकट का परिणाम माना जाए।

कुछ समय पहले आस्ट्रेलियाई वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन में बताया था कि बढ़ते तापमान से बड़े समुद्र के जलस्तर ने प्रशांत महासागर के पांच द्वीपों को जलमग्न कर दिया है। इन द्वीपों पर मानव बस्तियां नहीं थीं। दुनिया के नक्शे से गायब हुए ये द्वीप थे- केल्,

रेपिता, कालातिना, झीलिम और रेहना। पापुआ न्यू गिनी के पूर्व में यह सालोमन द्वीप समूह का हिस्सा थे। पिछले दो दशकों में इस क्षेत्र में समुद्र के जलस्तर में सालाना दस मिली की दर से बढ़ोत्तरी हो रही है। ग्रीनलैंड के पिघलते ग्लेशियर समुद्री जलस्तर को कुछ सालों के भीतर ही आधा मीटर तक बढ़ा सकते हैं।

शताब्दियों से प्राकृतिक रूप में हिमखंड पिघल कर नदियों की अवरिाल जलधारा बनते रहे हैं। लेकिन भूमंडलीकरण के बाद प्राकृतिक संपदा के दोहन पर आधारित जो औद्योगिक विकास हुआ है, उससे उत्सर्जित कार्बन ने इनके पिघलने की तीव्रता को बढ़ा दिया है। एक शताब्दी पूर्व भी हिमखंड पिघलते थे, लेकिन बर्फ गिरने के बाद इनका दायरा निरंतर बढ़ता रहता था। इसीलिए गंगा और यमुना जैसी नदियों का



प्रवाह बना रहा। किंतु 1950 के दशक से ही इनका दायरा तीन से चार मीटर प्रति वर्ष घटना शुरू हो गया था। गंगोत्री के हिमखंड अब हर साल तेजी से पिघल रहे हैं। कमोबेश यही स्थिति उत्तराखंड के पांच अन्य हिमखंडों- सतोपंथ, मिलाम, नीति, नंदादेवी और चोराबाड़ी की है। भारतीय हिमालय में कुल 9975 हिमखंड हैं। इनमें नौ सी उत्तराखंड के क्षेत्र में आते हैं। इन हिमखंडों से ही ज्यादातर नदियां निकली हैं, जो देश की चालीस प्रतिशत आबादी को पेय, सिंचाई और आजीविका के अनेक संसाधन उपलब्ध कराती हैं। लेकिन हिमखंडों के पिघलने और टूटने का यही सिलसिला बना रहा तो देश के पास ऐसा कोई उपाय नहीं है कि वह इन नदियों से जीवन-यापन कर रही

कसौटी पर इंसानियत

के सब लोगों को जानते थे और वे सब हमें।

आज इतने सालों बाद जब हम अपने आसपास देखते हैं तो पाते हैं कि हर पल बीतता जीवन हर रोज लगभग एक जैसा ही हो गया है। नौकरी में आने से पहले नौकरी को लेकर एक अलग तरह की अवधारणा मन में होती है। नौकरी एक तमगा लगती है जो हमारे ज्ञान और हमारी क्षमता को जैसे ‘प्रमाण-पत्र’ देती है। वह हमें एक नया आयाम लगती है, जिससे हम अपनी क्षमताओं को एक नया रूप, नया आकार और नई ऊंचाई दे सकते हैं। मगर आज नौकरी के कोई आठ साल बीत जाने पर मैं यह कह सकती हूँ कि वह कोई तमगा नहीं है, कोई उपलब्धि भी नहीं है। ये जीविकोपार्जन और हमारे द्वारा किए जाने वाले कुछ निश्चित क्रियाकलापों का लेखा-जोखा भर है।

इस नौकरी को और नीरस करता है वहां का वातावरण। इस वातावरण में ही जैसे कुछ अलग और अप्राकृतिक है जो वहां काम करने वालों को थोड़ा कम मानवीय बनाता है। वहां एक अलग तरह का दबाव-सा है- अदृश्य-सा, एक डर है- हमेशा पुकारे जाने का। शायद पुकारे जाने का भी नहीं, बल्कि उसके बाद कहे या सुने जाने वाले शब्दों का! शायद

आपदा की मार

इस बार पटना में भारी बारिश से कई घर पांच-छह फीट तक पानी में डूब गए। लगभग पूरे शहर का यही हाल था। इस बार बिहार में बारिश और बाढ़ से लाखों लोग प्रभावित हुए हैं। केंद्रीय गृह मंत्रालय के मुताबिक इस वर्ष मानसून के दौरान हुई बारिश और बाढ़ से करीब दो हजार लोगों की मौत हुई और खिलासत लोग लापता है। बिहार में अब भी बाढ़ के हालात हैं। अभी बिहार में चुनाव नहीं हैं, इसलिए सरकार को भय भी नहीं अपनी सत्ता के खोने का। यदि चुनाव होते तो

किसी भी मुद्दे या लेख पर अपनी राय हमें भेजें। हमारा पता है : ए-8, सेक्टर-7, नोएडा 201301, जिला : गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश
आप चाँहें तो अपनी बात ईमेल के जरिए भी हम तक पहुंचा सकते हैं। आइडी है : chaupal.jansatta@expressindia.com

जब बीच का रास्ता तलाशा जाएगा। पहले तो यह देखा जाए कि कम से कम पेड़ काटने पड़ें, फिर यह सुनिश्चित किया जाए कि जितने पड़े काटे जाएं, उससे कहीं अधिक न केवल लगाएं जाएं, बल्कि उनकी देखभाल भी की जाए। अगर यह जिद पकड़ी जाएगी कि चार पेड़ भी न कटने पाएं, भले ही विकास के काम न हों तो इससे बात नहीं बनेगी। यह ठीक नहीं कि विकास की कई योजनाएं पर्यावरण संबंधी सवालों से दो-चार होने के कारण अटक पड़ी हुई हैं। इनमें से कुछ की तो लागत भी बड़ा र्घ है। निश्चित रूप से विकास की चिंता करते समय पर्यावरण की भी चिंता करनी होगी, लेकिन केवल तभी नहीं जब किसी योजना-परियोजना की राह में कुछ वृक्ष आ रहे हों।

● **हेमन्त कुमार, गोरगडौह, बिहार**

पचास करोड़ आबादी को रोजगार और आजीविका के वैकल्पिक संसाधन दे सके।

बढ़ते तापमान के कारण अंटार्कटिका का हिमखंड टूटा तो अब है, लेकिन इसके पिघलने और बर्फ के कम होने की खबरें निरंतर आ रही थीं। यूएस नेशनल एंड आइस डाटा सेंटर ने उपग्रह के जरिए जो चित्र हासिल किए हैं, उनसे ज्ञात हुआ है कि एक जून 2016 तक यहां एक करोड़ दस लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में बर्फ थी, जबकि 2015 में यहां औसतन एक करोड़ सत्ताईस लाख वर्ग किमी क्षेत्र में बर्फ थी। सोलह लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में जो समुद्री बर्फ कम हुई है, यह क्षेत्रफल ब्रिटेन को छह बार जोड़ने के बाद धुने वाले क्षेत्रफल के बराबर है। पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव के आसपास के इलाकों को आर्कटिक कहा जाता है। इस क्षेत्र में आर्कटिक महासागर, कनाडा का कुछ हिस्सा, डेनमार्क का ग्रीनलैंड, रूस का एक हिस्सा, संयुक्त राज्य अमेरिका का अलास्का, आइसलैंड, नावे, स्वीडन और फिनलैंड शामिल हैं। भारत से यह इलाका 9863 किलोमीटर दूर है। रूस के उत्तरी तटीय इलाकों में समुद्री बर्फ लुप्त हो रही है। इस क्षेत्र में समुद्री गर्मी निरंतर बढ़ने से अनुमान लगाया जा रहा है कि कुछ सालों में यह बर्फ भी पूरी तरह खत्म हो जाएगी।

बढ़ते तापमान को रोकना आसान काम नहीं है, बावजूद इसके हम अपने हिमखंडों को टूटने और पिघलने से बचाने के उपाय औद्योगिक गतिविधियों को विराम देकर कर सकते हैं। पर्यटन के रूप में मानव समुदाय की जो आवाजाही बढ़ रही है, उस पर भी अंकुश लगाने की जरूरत है। इसके अलावा वाकई हम अपनी बर्फीली शिलाओं को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो हमारी ज्ञान परंपरा में हिमखंडों की सुरक्षा के जो उपाय उपलब्ध हैं, उन्हें भी महत्व देना होगा।

हिमालय के शिखरों पर रहने वाले लोग आजादी के दो दशक बाद तक बरसात के समय छोटी-छोटी क्यारियां बना कर पानी रोक देते थे। तापमान शून्य से नीचे जाने पर यह पानी जम कर बराल बन जाता था। इसके बाद इस पानी को ऊपर नमक डाल कर जैविक कचरे से इसे ढक देते थे। इस प्रयोग से लंबे समय तक यह बर्फ जमी रहती थी और गर्मियों में इसी बर्फ से पेयजल की आपूर्ती की होती थी। इस तकनीक को हम ‘चाटर हार्वेस्टिंग’ की तरह ‘स्नो हार्वेस्टिंग’ भी कह सकते हैं। हालांकि पृथ्वी के ध्रुवों में समुद्र के खारे पानी को बर्फ में बदलने की क्षमता प्राकृतिक रूप से होती है। बहरहाल, हिमखंडों के टूटने की घटनाओं को गंभीरता से लेने की जरूरत है।

अध्याय नहीं लिखा गया। काम करने की जगह सिर्फ कुछ जरूरी कहे जाने वाले कामों को पूरा करने के लिए नहीं होनी चाहिए और न ही ये केवल जीविकोपार्जन के लिए होनी चाहिए। यह एक ऐसी जगह होनी चाहिए, जहां हर व्यक्ति कल के मुकाबले आज ज्यादा भरा हुआ हो। भरा हुआ होना एक भारी और महत्त्वपूर्ण शब्द है। काम करने की जगह ऐसी हो, जहां उसकी क्षमताओं में वृद्धि हो; जो उसे एक खुले मैदान जैसी लगे, न कि चारदिवाली की कैद जैसी। वहां आत्मसम्मान मिले जहां जाकर वह खुश हो। जहां जाकर उसे लगे कि वह अपने सीखे हुए का सार्थक इस्तेमाल कर सकता है और उसके किए कामों को सिर्फ उसकी जिम्मेदारी मान कर अनदेखा नहीं कर दिया जाएगा, बल्कि उसे उसका श्रेय भी मिलेगा।

दरअसल, हम इस पूरी व्यवस्था में कहीं उत्पीड़ित हैं तो कहीं उत्पीड़क भी। तो अगली बार अपने सहयोगियों और सहकर्मियों से मिलते हुए सबसे पहले मुस्कुराना और उनका हालचाल पूछना मत भूलिएगा। हम सबकी यह कोशिश शायद इस दुनिया को रहने लायक एक बेहतर जगह बना सके। हम मनुष्य एक लंबी यात्रा पर हैं जिसमें मशाल एक से दूसरे को देने पर ही हम आगे बढ़ सकते हैं।

सकती थी। जो व्यापारी इस प्रकार के समय में कम दाम में चीजें खरीद कर महंगे में बेचते हैं, सरकार को ऐसे समय में इस पर रोक लगानी चाहिए क्योंकि इसी के कारण असल महंगाई शुरू होती है। दूसरा, किसी भी आपदा से बचने के लिए सरकार के पास ठोस व कारगर समाधान होने चाहिए ताकि इस प्रकार के समय में न ही किसानों को तंगी हो और न ही आमजन को और न ही हमारी अर्थव्यवस्था पर कोई असर पड़े क्योंकि इस आपदा और प्याज की कमी के कारण भारत ने इस का निर्यात रोक दिया और भारत में ही सबसे अधिक प्याज की फसल उगाई जाती है जिससे निःसंदेह हमारे देश को घाटा हुआ है।

● **जानवी विडुल, जलंधर**

बेटों की तस्करी!

दिल्ली की एक आइवीएफ क्लीनिक पर छापा क्या पड़ा, देश का क्रूर चेहरा सामने आ गया। दिन के उजाले में सरकार की नाक के नीचे बेटों की तस्करी का धंधा फलता-फूलता रहा। भारत में भ्रूण परीक्षण कानूनी तौर पर प्रतिबंधित है। लिहाजा क्लिनिक के कौल सेंटर ने गुप्तचुप भ्रूण परीक्षण की सुपारी ली और बदले में दिए दुबई के टिकट। ऑनलाइन साइट से खुल्लम-खुल्ला लुका-छिपी का खेल खेला गया और किसी को भनक तक नहीं लगी। निश्चित रूप से बेटों की चाहत में गैरकानूनी और महंगे धंधे में देश के घनाढ्य लोगों का हाथ होना तय है। इस देश में अपराधियों का एनकाउंटर ने ही जाता है, मगर सफेदपोशों की पहचान तक मुमकिन नहीं होती। ऐसे गोरखधंधे में शामिल अस्पतालों और लाभार्थियों की तुरंत धर-पकड़ की जानी चाहिए, ताकि बेटियों के साथ होते अन्याय पर अंकुश लग सके।

● **एमके मिश्रा, राठू**